इन्दौर नगर में सूरि मंत्र की तीसरी पीठिका संपन्न
एक ऐतिहासिक उत्सव बना
25 दिवसीय सूरिमंत्र साधना का महामांगलिक

इन्दौर 28 अक्टुंबर। परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने सूरिमंत्र की तृतीय पीठिका की 25 दिवसीय साधना के पश्चात् प्रथम साक्षात्कार एवं महामांगलिक में अखिल भारत वर्ष से सैंकडों गुरुभक्तों ने सम्मिलित होकर जिनशासन का जयघोष किया।

पूज्यश्री ने 4 अक्टूबर को 25 दिवसीय पीठिका साधना का प्रारंभ किया था। ता. 28 को प्रातः विशिष्ट पूजन के साथ साधना संपन्न हुई। पूज्यश्री ने पूरा समय मौन, एकान्त व आयंबिल उपवास आदि तप के साथ साधना की। ता. 28 को साधना की पूर्णाहुति के अवसर पर प्रातःकाल से प्रारंभ पूजन विधि में उपस्थित गुरुभक्तों ने अनुशासनपूर्वक विधि–विधान करते हुए आराधना के शिखर की स्पर्शना की। विधि पूर्ण होते–होते गुरुभक्तों ने गुरुवर के प्रति श्रद्धा का अपूर्व अहोभाव प्रकट कर बधाईयों की श्रेणियां समर्पित की।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री के साथ शिष्य मंडल एवं साधना विधान के लाभार्थी श्री विजयजी रोहनजी रोहितजी रेयांसजी मेहता परिवार इन्दौर निवासी ने साधना को महोत्सव के रूप में मनाया।

साधना कक्ष के बाहर पौने नौ बजे से ही भक्तों का ज्वार उमड़ पडा। ठीक नौ बजे पूज्यश्री साधना कक्ष से बाहर पधारे। जिनमंदिर दर्शन करने के उपरान्त हजारों श्रद्धालुओं के साथ प्रवचन पाण्डाल में पधारे।

इस अवसर पर प्रवचन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. ने पूज्य गुरुदेवश्री के गुणों का वर्णन किया।

पूज्य बालमुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने पूज्यश्री के प्रति अपना समर्पण अभिव्यक्त करते हुए कहा– आज इतने दिनों के मौन के बाद पूज्यश्री हमसे वार्तालाप करेंगे। उन्होंने पूज्यश्री की कमियों का नये तरीके से वर्णन करते हुए सकल संघ को चमत्कृत कर दिया। और स्वयं के लिए आशीर्वाद की याचना की।

समारोह का संचालन करते हुए आर्य मेहुलप्रभसागरजी म. ने सूरिमंत्र की विवेचना की। उन्होंने कहा– साधु–साध्वी पंच परमेष्ठी मंत्र जाप करते हैं। गणी, उपाध्याय, महत्तरा, प्रवर्तिनी आदि पदधारी वर्धमान विद्या की साध ाना करते हैं। और आचार्य सूरिमंत्र के पीठिकाओं की साधना विशिष्ट रूप से करते हैं।

उन्होंने कहा– यह मेरा सौभाग्य है जो मुझे सेवा का यह अनमोल अवसर प्राप्त हुआ है। जिसमें मुझे अपूर्व आनंद संप्राप्त हुआ।

इस अवसर पर महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी म. पू. साध्वी विरलप्रभाश्रीजी म. ने भी पूज्यश्री की साधना के लिये बधाई प्रस्तुत करते हुए उनके गुणों का वर्णन किया।

पूज्यश्री ने इस अवसर पर सूरिमंत्र की पांच पीठिकाओं की विवेचना की। उन्होंने कहा– सूरिमंत्र की पहली पीठिका बुद्धि को तीक्ष्ण करती है। दूसरी पीठिका यश का वर्धन करती है। तीसरी पीठिका वृद्धि का द्योतक है। चौथी पीठिका शक्ति और पांचवी पीठिका लब्धि का विस्तार करती है।

उन्होंने कहा– सूरिमंत्र की साधना सकल श्रीसंघ के लिये परम कल्याणकारी हो, ऐसी कामना है। 25 दिन की एकांत में साधना का अद्‌भुत आनंद मिला है। मन बाहर आना नहीं चाहता। एकांत में रमा मन बाहर नहीं आए यही जीवन की सार्थकता है। उन्होंने प्रवचन के पश्चात् महामांगलिक सुनाई। हजारों लोगों ने परम श्रद्धा और पूर्ण मौन के साथ महामांगलिक का श्रवण किया।

सूरिमंत्र साधना समारोह के लाभार्थी परिवार श्री विजयजी पुष्पाजी रोहितजी रोहनजी रेयांसजी मेहता परिवार की ओर से पूज्यश्री का गुरुपूजन किया गया।

उसके बाद सकल श्रीसंघ की ओर से रायपुर निवासी सौ. संजूदेवी अशोकजी तातेड परिवार ने गुरुपूजन का लाभ लेकर गुरुपूजन किया।

इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी सेखावत, संयोजक श्री छगनराजजी हुण्डिया, जितेन्द्रजी मालू ने भी पूज्यश्री का अभिनंदन किया।

संघवी वंसराजजी भंसाली ने शंखेश्वर दादावाडी की योजना प्रस्तुत की।

बडवाह श्रीसंघ की ओर से पूज्यश्री को बडवाह पधारने की विनंती की गई।

मुमुक्षु शुभम् कुमार लूंकड की दीक्षा 18 फरवरी को

इन्दौर 28 अक्टूबर। जोधपुर निवासी श्रीमान् मोतीलालजी सौ. उमादेवी के सुपुत्र परम वैरागी मुमुक्षु श्री शुभम्कुमार लूंकड की भागवती दीक्षा उज्जैन नगर में अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ की प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर 18 फरवरी 2019 को संपन्न होगी।

पूज्यश्री के सूरिमंत्र की तीसरी पीठिका साधना समारोह के महामांगलिक अवसर पर इस शुभ मुहूर्त्त की घोषणा की गई।

मुमुक्षु शुभम् लूंकड का पूरा परिवार दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त प्राप्त करने के लिये इन्दौर पूज्यश्री की सेवा में पहुँचा। श्रावक प्रवर श्री मोतीलालजी लूंकड ने कहा– शुभम् की तीव्र भावना को देखते हुए इसे चारित्र ग्रहण की अनुमति दी है। आपश्री इसकी दीक्षा का मुहूर्त्त प्रदान करें।

शुभम् की बहिन सौ. श्रीमती शिल्पा ने शुभम् के बचपन की घटनाओं का उल्लेख किया, सभी की आंखों से अश्रु बहने लगे। शुभम् के पिताजी श्री मोतीलालजी लुंकड ने अपने लाडले पुत्र के वैराग्य–भावों की कसौटी पर खरा उतरने की कहानी सुनाते हुए पूज्य खरतरगच्छाधिपतिश्री से मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया।

मुमुक्षु शुभम् लूंकड के भाषण ने सभी को प्रभावित किया। उसने अपने उपकारी पूजनीया गुरुवर्या गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. सा. पू. मासी म.सा. श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. आदि के उपकारों का विस्तार से वर्णन किया। उसने अपने माता–पिता के उपकारों का वर्णन करते हुए कई घटनाऐं सुनाई। सभी की आंखों से बहते आंसु चारित्र भावों की अनुमोदना कर रहे थे।

उसने कहा– आज मेरे आनंद का छोर नहीं है। जिस मार्ग पर चलने के लिए वर्षों से लालायित था, जिसके लिए अनेक संकल्प लिए वे आज सफल और सार्थक हो रहे है। मैं एक लूंकड परिवार से अलग हो रहा हूँ, और दूसरे लूंकड परिवार का हिस्सा बनने जा रहा हूँ।

परिवार को शुभ मुहूर्त्त प्रदान करते हुए पूज्यश्री ने कहा– 20 वर्ष की उम्र में परिपक्व उम्र में चारित्र लेना, इससे बडा कोई चमत्कार नहीं हो सकता।

उन्होंने कहा– माता–पिता का यह उपकार है कि उन्होंने जीवन दिया, संस्कार दिये और चारित्र की अनुमति दी।

मुहूर्त्त ग्रहण करते ही शुभम् नृत्य करने लगा, मानो उसके हाथ में रजोहरण आ गया है। दीक्षा मुहूर्त्त घोषणा से समारोह की महिमा में चार चांद लग गये।

इस अवसर पर मुमुक्षु मंडल की ओर से मुमुक्षु अमित बाफना ने दीक्षार्थी शुभम् को बधाई दी।

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ इन्दौर एवं साधना के लाभार्थी श्री विजयजी मेहता परिवार की ओर से दीक्षार्थी शुभम् एवं उनके परिवार का अभिनंदन किया गया।

सूरिमंत्र साधना के उपलक्ष में देश भर में सामायिक का आयोजन

28 अक्टूबर। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सूरि मंत्र की तीसरी पीठिका की तप, जप व मौन पूर्वक साधना के उपलक्ष्य में पूर्णाहुति पूजन महामांगलिक के दिन ता. 28 अक्टूबर 2018 को अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के तत्वावधान में देश भर में सामायिक साधना का आयोजन किया गया।

सवा सौ से अधिक शहरों, गाँवों में सामायिक का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। देश भर में 8 हजार से अधिक सामायिक आराधना संपन्न हुई।

सामायिक आराधना करके श्रद्धालुओं ने पूज्यश्री के प्रति अपना श्रद्धा भाव व कृतज्ञता भाव प्रकट किया।

चतुर्थ वांचना शिविर का आमंत्रण

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद एवं अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वांचना शिविर में समस्त ज्ञान रसिक, स्वाध्याय रसिक, धर्म रसिक बंधु भगिनी सादर आमंत्रित है।

तीन वांचना शिविर की सफलता के बाद पुनः आपकी ज्ञान अभिवृद्धि हेतु प्रस्तुत है यह चतुर्थ वांचना शिविर दि. 26 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2018 तक वृहत भूभाग में निर्मित जिन शासन की अलौकिक कृति कुशल वाटिका (बाड़मेर) के मनमोहक वातावरण में आयोजित किया गया है।

पू. खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा के आज्ञा एवं आशीर्वाद से उनके शिष्य स्वाध्याय रसिक पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी. म., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी. म., पू. मुनि श्री विरक्ततप्रभसागरजी. म., मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी. म. की निश्रा में यह शिविर आयोजित होगा।

आप सभी को अवश्य पधारना है। साथ ही अपने 12 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों को भी आने हेतु प्रेरित करना है। कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें जिससे आपके आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

संपर्क सूत्र– रमेश लुंकड़ 94232 86112, ललित डाकलिया 99508 82563, रमेश मालू 98442 51261

अनुशासन एवं सभी कार्यक्रमों में उपस्थिति अनिवार्य रहेगी।

देराउर में मेला

जयपुर 25 नवंबर। देराउर दादावाडी में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म. की 739वां जन्मोत्सव 25 नवंबर 2018 को पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. की आज्ञानुवर्तिनी पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में मनाया जाएगा।

समस्त कार्यक्रम का लाभ श्री ऋषभकुमारजी चौधरी परिवार ने लिया है।

पधारने का सभी को आमंत्रण है।

प्रेषक जहाज मंदिर कार्यालय